

अध्याय 4

सामग्री विश्लेषण

इसके अंतर्गत अध्याय विश्लेषण निहित है -पुस्तक सामग्री विश्लेषण (Book Content Analysis) एक व्यवस्थित तकनीक है जिसके माध्यम से किसी पुस्तक की सामग्री का विश्लेषण कर यह समझा जाता है कि उसमें कौन से विषय, मूल्य, विचार, भावनाएँ, दृष्टिकोण, या संदेश प्रस्तुत किए गए हैं, और वे कैसे पाठक या पाठ्यक्रम को प्रभावित करते हैं।

मुख्य उद्देश्य—

पुस्तक की विचारधारा या मूल्य-तंत्र को समझना, भाषा, शैली व संरचना का मूल्यांकन करना, लेखक के उद्देश्य, दृष्टिकोण व प्रभाव की पहचान करना, पुस्तक में मौजूद सामाजिक, सांस्कृतिक या शैक्षिक संदेशों का विश्लेषण करना

पाठ्यक्रम/शिक्षा नीति के अनुरूपता की जाँच करना, पुस्तक सामग्री विश्लेषण के प्रमुख तत्व:

विवरण

विश्लेषण पक्ष

विषयवस्तु (Themes)

पुस्तक में प्रमुख विषय कौन-कौन से हैं? जैसे – शिक्षा, नैतिकता, समाज, राजनीति आदि।

मूल्य (Values)

क्या पुस्तक में नैतिक, सांस्कृतिक या सार्वभौमिक मूल्य दर्शाए गए हैं?

शैली (Style)

भाषा की सरलता, भावाभिव्यक्ति, कथा की प्रवाहिता आदि का मूल्यांकन

संरचना (Structure)

पुस्तक के अध्यायों का संगठन, पाठों का क्रम, चित्र/संदर्भ का प्रयोग

शिक्षा नीति से सामंजस्य

क्या पुस्तक नई शिक्षा नीति (NEP 2020) जैसे दस्तावेजों से मेल खाती है?

पुस्तक सामग्री विश्लेषण करने की प्रक्रिया:

पुस्तक का चयन - अध्ययन हेतु उपयुक्त पुस्तक चुनना (जैसे “आनंद सभा पाठ्यक्रम”)

उद्देश्य निर्धारण - विश्लेषण किस दृष्टिकोण से करना है? (जैसे - नैतिक मूल्य)

कोडिंग (Coding) - विषयों/मूल्यों को वर्गीकृत करना जैसे - करुणा, समानता, न्याय

सामग्री का वर्गीकरण - पाठों में कौन-कौन से मूल्य कितनी बार या किस तरह प्रस्तुत हुए

विश्लेषण और व्याख्या - डेटा का विश्लेषण कर सार्थक निष्कर्ष निकालना

रिपोर्ट लेखन - अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष और सुझाव प्रस्तुत करना

“आनंद सभा पाठ्यक्रम” का सामग्री विश्लेषण कर रहे हैं और उद्देश्य है – “सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का पता लगाना”, तब पाठ या गतिविधि को पढ़कर यह नोट करेंगे कि:

कौन-कौन से मूल्य उसमें हैं (जैसे करुणा, सह-अस्तित्व)?

वे मूल्य अध्याय कहानी या गतिविधि में कैसे व्यक्त हुए हैं?

क्या वह मूल्य स्पष्ट रूप से बच्चों तक पहुँचता है?

पुस्तक सामग्री विश्लेषण: एक वैज्ञानिक व शैक्षणिक तकनीक है जो पुस्तक की सामग्री को मात्रात्मक (Quantitative) और गुणात्मक (Qualitative) दोनों दृष्टियों से समझने में सहायक होती है। यह विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण होती है जब किसी पाठ्यपुस्तक या शैक्षिक सामग्री के मूल्य, प्रभाव, या नीति-संगति का अध्ययन करना हो।

कवर पृष्ठ - आनंद सभा सार्वभौमिक मूल्यों से आनन्द की ओर - (सार्वभौमिक मानवीय मूल्य)

पाठ्यपुस्तक (कक्षा 10)

मुख्य शीर्षक और टैगलाइन: “आनंद सभा - सार्वभौमिक मूल्यों से आनंद की ओर (सार्वभौमिक मानवीय मूल्य)”, संकेत और संदेश: यह स्पष्ट रूप से बताता है कि यह पुस्तक केवल शैक्षणिक विषयवस्तु नहीं बल्कि एक जीवन दृष्टिकोण (Way of Living) सिखाने के लिए बनाई गई है।

“आनंद की ओर” वाक्यांश का अर्थ है – छात्र केवल ज्ञान ही नहीं, आंतरिक सुख और संतुलन की दिशा में भी आगे बढ़ें।

रंग योजना और डिज़ाइन:

तत्व	विश्लेषण
गुलाबी-गेरुआ पृष्ठभूमि	यह रंग संयोजन शांति, उत्साह और आत्मचिंतन का प्रतीक है। यह मन को स्थिर और सकारात्मक करता है।
ब्रश स्ट्रोक डिज़ाइन	यह एक रचनात्मकता और खुली सोच का प्रतीक है, जो दर्शाता है कि यह पाठ्यक्रम कोई जड़ या रटने वाली बात नहीं, बल्कि व्यक्तिगत अनुभव और खोज पर आधारित है।
सरल लेकिन औपचारिक फॉन्ट	विषय को गंभीरता और सम्मान देने वाला। यह छात्रों को विषय की महत्ता समझाता है।

प्रकाशक और सहयोगी संस्थाएँ: राज्य आनंद संस्थान (म.प्र. शासन) और AICTE, नई दिल्ली - यह इस पाठ्यक्रम की गंभीरता और अधिकारिकता को दर्शाता है। जब विद्यार्थी यह देखता है कि इसे राज्य और राष्ट्रीय स्तर की संस्थाएं मान्यता दे रही हैं, तो उसे भरोसा और प्रेरणा मिलती है।

छात्रों पर पड़ने वाला प्रभाव:

पहलू

प्रभाव

मनोवैज्ञानिक प्रभाव

कवर पृष्ठ एक शांत, सौम्य और जिज्ञासा जगाने वाला माहौल बनाता है। विद्यार्थी इसे देखकर विषय में रुचि ले सकता है।

शैक्षिक संदेश

यह यह बताता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल अंक लाना नहीं बल्कि मानव बनने की प्रक्रिया को अपनाना है।

नैतिक और मूल्यपरक प्रेरणा

“सार्वभौमिक मानवीय मूल्य” जैसे शब्द बच्चों में विचारों की गहराई उत्पन्न करते हैं – जैसे कि सभी के लिए प्रेम, करुणा, अहिंसा आदि।

सकारात्मकता की ओर झुकाव

“आनंद” शब्द स्वयं में एक सकारात्मक शक्ति है जो छात्र को पाठ्यक्रम की ओर आकर्षित करता है।

पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर राष्ट्रगान तथा राष्ट्रीय ध्वज की छवि अंकित की गई है जिसमें ध्वज और राष्ट्रगान का विस्तृत विवरण विद्यार्थियों की जानकारी के लिए प्रस्तुत किया है। जिससे परिलक्षित होता है कि विद्यार्थियों में देशभक्ति और राष्ट्र चेतना का भाव और सम्मान रोपित और विकसित किया जा सके।

किताब के अन्तिम पृष्ठ पर भारत का संविधान भाग 4 क

नागरिकों के मूल कर्तव्य, अनुच्छेद 51 क अंकित किये गए हैं जिसके मूल भाव विद्यार्थियों को ज़िम्मेदार नागरिक बनाना जिससे छात्र अपने कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक और ज़िम्मेदार रहें। “आनंद सभा” पाठ्यपुस्तक का कवर पृष्ठ न केवल एक आकर्षक डिज़ाइन है, बल्कि यह एक स्पष्ट और गहरा संदेश देता है – यह कवर छात्रों के मन में आत्मनिरीक्षण, जागरूकता और आत्मिक विकास की भावना पैदा करता है, जो कि NEP 2020 के उद्देश्यों और सार्वभौमिक मूल्यों के बिल्कुल अनुरूप है। पुस्तक में निहित सभी अध्याय प्रस्ताव के रूप में वर्णित हैं जिनमें किसी प्रकार का मूल्यांकन सही या गलत के रूप में ना हो कर केवल प्रस्ताव स्वरूप दिया जाता है। जिसमें विद्यार्थी अपनी सहज स्वीकृती के आधार पर स्व अन्वेक्षण और स्वयं में प्रस्ताव को जाँच परख करके दिखने के बाद ही प्रस्तावों को मान्य या अमान्य करने हेतु स्वतंत्र है। इस पुस्तक में कुल 11 अध्याय समाहित हैं। प्रत्येक अध्याय

का अपना एक मूल्य है जिसके द्वारा विद्यार्थी स्व प्रेरणा से मूल्यों को समझने और जीवन में अपनाने की ओर अग्रसर होता है। इन अध्यायों द्वारा श्रोता धीरे धीरे अपने भीतर एक संवाद प्रक्रिया के माध्यम से सहज स्वीकृति के आधार पर जांचना प्रारम्भ करते हैं। 'जैसे आप हैं' और 'जैसा होना आपको सहज स्वीकार्य है'। इस पुस्तक में दिए गए समस्त प्रस्तावों का ध्यान आकर्षण केवल श्रोताओं को स्वयं में स्व अन्वेक्षण स्व अध्यापन की प्रक्रिया शुरू करने में सहयोग करने हेतु है। स्व अन्वेक्षण की इस प्रक्रिया में श्रोता इन मूल्यों को स्वयं में देख सकेंगे जो प्राकृतिक रूप से उनमें अंतर्निहित है। यह सभी प्रस्ताव स्व विकास अर्थात् आत्म विकास की ओर ले जाएंगे, जिसके परिणाम स्वरूप उनके मूल चाहना के पूर्ति हो पाएगी।

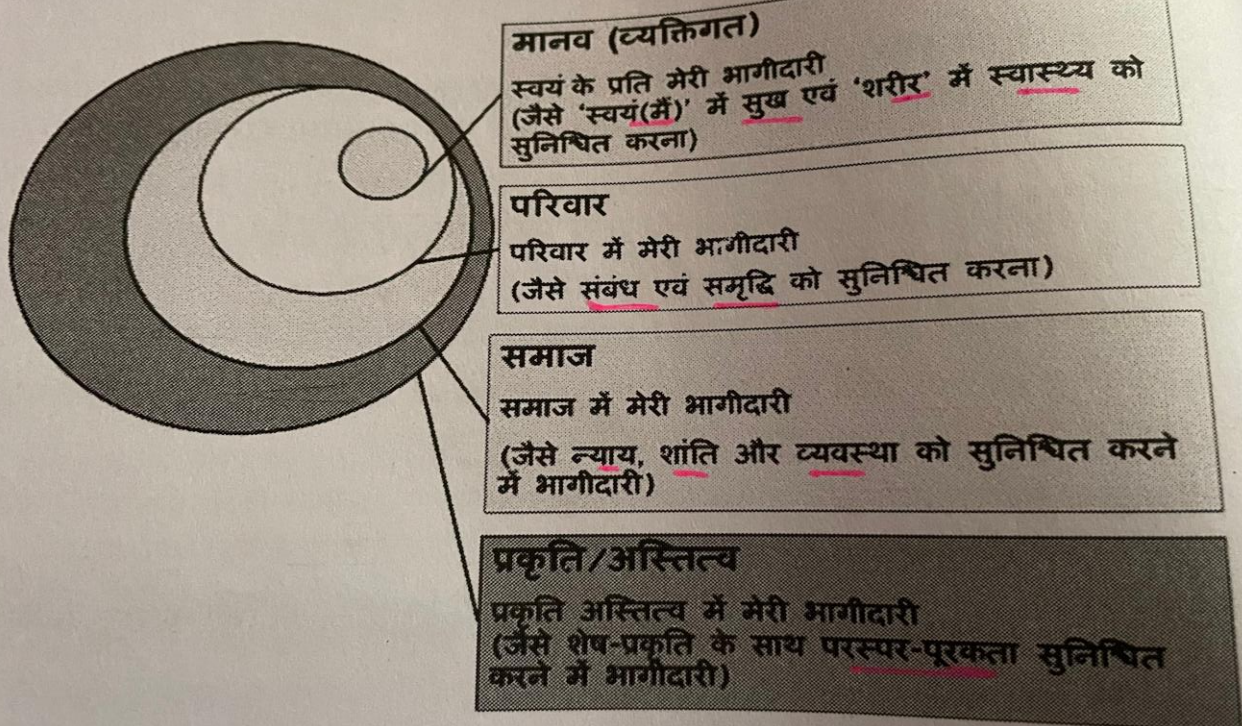
अध्याय 1: मूल्यों शिक्षा को समझना

मुख्य विचार: तृप्तिपूर्ण जीवन, मूल्य और कौशल की पूरकता, नैतिक दृष्टि का विकास। समग्र दृष्टि के साथ जीने के कार्यक्रम की स्पष्टता, वर्तमान समस्याओं का समाधान।

मूल्य शिक्षा , शिक्षा का वह हिस्सा जय जो मानव की बड़ी व्यवस्था में भागीदारी की समझ और वैसा ही जीने को सुनिश्चित करता है, मूल्य शिक्षा की विषयवस्तु में मानव के जीने के सभी स्तर एवं मानव के जीने के सभी आयाम सम्मिलित हो । मानव में नैतिक योग्यता के विकास से व्यावसायिक नैतिकता सुनिश्चित होती है

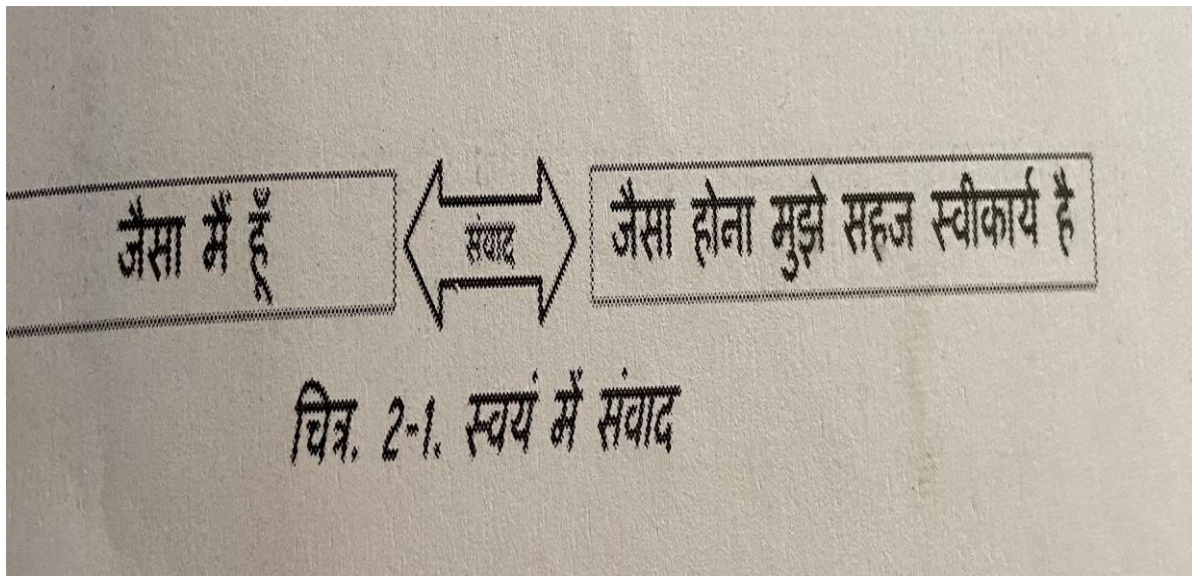
विश्लेषण: यह अध्याय शिक्षा को केवल रोज़गार या जानकारी तक सीमित न रखते हुए जीवन जीने की कला के रूप में प्रस्तुत करता है। मूल्य शिक्षा की प्रक्रिया के लिए स्व अन्वेक्षण की प्रक्रिया आवश्यक है। स्व अन्वेक्षण की प्रक्रिया में सहज स्वीकृति के आधार पर स्वयं में जाँच और उसको जीने में प्रयोग करके आने वाले परिणामों को जाँचना सम्मिलित है। यह स्पष्ट करता है कि मानवीय मूल्यों के बिना व्यावसायिक कौशल अधूरा है। अंत में स्व समझ हेतु स्व मूल्यांकन के लिए प्रश्न तथा स्व- अन्वेक्षण के लिए अभ्यास दिए गए हैं जिनके माध्यम से विद्यार्थी स्वयं से सहज स्वीकृति के आधार पर अपना निर्णय लेने में सक्षम हो पाते हैं।

समझ: इस अध्याय के बाद छात्र में छोटी छोटी भागीदारी के साथ सुखी होने का अभ्यास और अनुभूति हो पाती है । उसकी भागीदारी का निर्वाह करने की योग्यता विकसित करने का प्रयास है और यही स्वतंत्रता और सुख है । अध्याय के अंत में "आपके प्रश्न" के माध्यम से छात्र और श्रोता उनके प्रश्न और शंका को अपनी नोटबुक में लिख कर दिए गए प्रस्तावों पर सहज स्वीकृति के आधार पर निर्णय और समझ के साथ उत्तर प्राप्त कर पाने की योग्यता रख पाते हैं ।



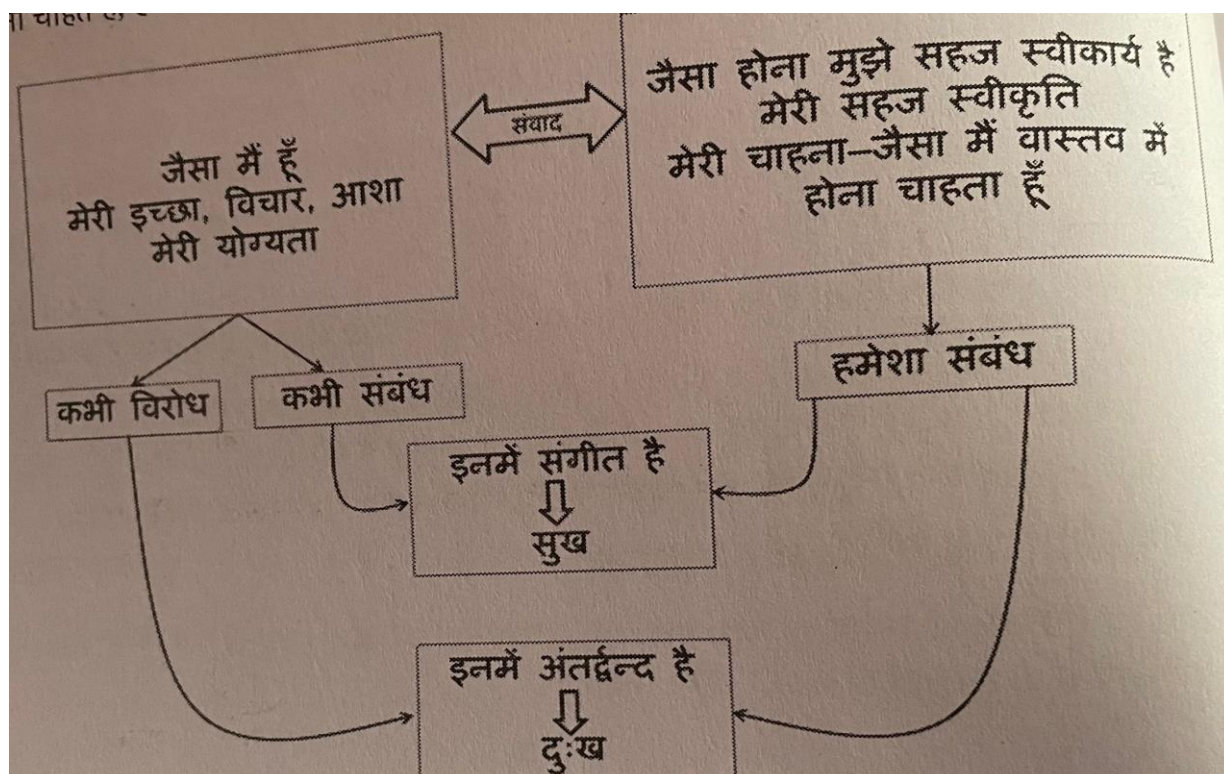
चित्र 1-1. बड़ी व्यवस्था में भागीदारी और अंतर्संबंध

अध्याय 2: स्व-अन्वेषण - मूल्य शिक्षा की प्रक्रिया



मुख्य विचार: स्वयं को जानने की प्रक्रिया, आत्मनिरीक्षण, दृष्टिकोण की स्पष्टता।

स्वयं को जानने की प्रक्रिया स्वयं में संवाद से प्रारंभ होती है। मेरे इच्छा, विचार, आशा, कल्पनाशीलता पर निर्णय या मेरी सहज स्वीकृति पर निर्णय लेना इस अध्याय में निहित है।



चित्र. 2-2. 'जैसा मैं हूँ' और 'जैसा मैं वास्तव में होना चाहता हूँ'

स्वयं में संगीत की स्थिति ही सुख है।

(Happiness is to be in a state of harmony)

स्वयं में अंतर्विरोध की स्थिति में जीने के लिये बाध्य होना ही दुःख है।

(Unhappiness is to be forced to be in a state of contradiction)

यह चित्र (चित्र 2-2)

‘स्व’ (self) और ‘स्वभाविक इच्छा’ (natural acceptance) के बीच के संबंध को स्पष्ट करता है। इसे सार्वभौमिक मानव मूल्यों के दृष्टिकोण से समझा जा सकता है।

मुख्य संरचना: * ‘जैसा मैं हूँ’ इसमें व्यक्ति की इच्छा, विचार, आशा और योग्यता आती है। यह वह स्थिति है जो व्यक्ति वास्तव में अभी अनुभव करता है।

‘जैसा होना मुझे सहज स्वीकार्य है’

यह वह स्थिति है जिसे व्यक्ति सहज रूप से स्वीकारता है, यानि भीतर से सही और उपयुक्त मानता है। इसमें व्यक्ति की सहज स्वीकृति और चाहत होती है।

इन दोनों के बीच संवाद होता है, और तब तीन स्थितियाँ बनती हैं:

हमेशा संबंध (संगीत) → सुख

कभी संबंध, कभी विरोध (आंशिक sangeet) → आंशिक सुख या संघर्ष

कभी विरोध (विरोधाभास/असंगति) → दुःख

प्रमुख अवधारणाएँ:

संगीत: जब 'जैसा मैं हूँ' और 'जैसा मैं होना चाहता हूँ' में मेल होता है, तो सुख उत्पन्न होता है।

यह आंतरिक सामंजस्य की स्थिति है।

विरोध / अंतरविरोध: जब दोनों में टकराव या विरोधाभास होता है, तो दुःख होता है। यह आत्म-संघर्ष की स्थिति है।

शिक्षाशास्त्रीय और मूल्यपरक विश्लेषण: उपयोगिता: यह आरेख छात्रों को स्व-चिंतन, आत्ममूल्यांकन और आत्मसंगति के लिए प्रेरित करता है। Universal Human Values की नींव इस बात पर है कि व्यक्ति अपने भीतर और बाहर संगति बनाए।

विकास और निर्णय-निर्माण में उपयोग:- जब विद्यार्थी अपने विचार और मूल्यों का विश्लेषण करते हैं, तो वे सही निर्णय लेने में सक्षम बनते हैं। यह आत्म-ज्ञान (self-awareness) की ओर पहला कदम है।

. Universal Human Values के संदर्भ में व्याख्या:

मानव आकांक्षा (Basic Aspiration): हर व्यक्ति सुख चाहता है – यह स्थिति तभी संभव है जब आत्म के स्तर पर संगति हो। **मानव मूल्य (Human Values):** स्वभाविक स्वीकृति के अनुसार जीने से ही मानव-मूल्यों का विकास होता है। यह चित्र दर्शाता है कि सच्चा सुख केवल बाहरी परिस्थितियों से नहीं, बल्कि अंतर्मन की संगति से उत्पन्न होता है। यदि व्यक्ति की वर्तमान स्थिति उसके भीतर की स्वीकृति से मेल खाती है, तो वही स्थायी सुख है।

मूल्य: आत्मचिंतन, ईमानदारी, स्वीकृति, शांति।

विश्लेषण: यह अध्याय भीतर की यात्रा को केंद्र में रखता है, जिससे विद्यार्थी स्वयं से संवाद कर सकें। यह आत्म-समझ से मूल्य शिक्षा को जोड़ता है।

प्रस्ताव: जो भी कहा जा रहा है या पढ़ाया जा रहा है, वह एक प्रस्ताव है – न कि अंतिम सत्य। छात्र को यह कहा जा रहा है कि किसी भी विचार को सही या गलत मानने के बजाय पहले जाँचना चाहिए।

यह सोच की स्वतंत्रता और व्यक्तिगत अनुभव के महत्व को दर्शाता है।

~स्वान्वेषण की दो प्रमुख अवस्थाएँ:

(1) जांच – अपनी सहज स्वीकृति के आधार पर:

कोई भी प्रस्ताव (statement/idea) हमें पहले भीतर से जाँचना चाहिए कि क्या यह हमारे भीतर सही लगता है?

यह भीतरी संवाद (inner dialogue) और आत्मनिरीक्षण (introspection) का हिस्सा है।

(2) प्रायोगिक सत्यापन – व्यवहार में जी कर देखना:

प्रस्ताव को केवल विचार स्तर पर नहीं, व्यवहार और कार्य में उतार कर परखना चाहिए।

यह दो शाखाओं में विभाजित है:

(2a) व्यवहार में, मानव के साथ:

यदि यह समझ मानव संबंधों में सुख पैदा करती है → तो यह सही समझ है।

(2b) कार्य में, शेष-प्रकृति के साथ:

यदि यह समझ प्रकृति के साथ समृद्धि लाती है → तो यह भी सही समझ मानी जाती है।

परिणाम: सही समझ

इन दोनों स्तरों (भीतर और बाहर) पर यदि एक प्रस्ताव को सही पाया गया, तो यह हमारी 'सही समझ' बन जाती है।

फिर यह समझ हमारे जीवन का आधार बनती है।

शैक्षिक और नैतिक महत्व:

यह प्रक्रिया छात्रों को आज्ञाकारिता नहीं, विवेकपूर्ण स्वीकृति की ओर ले जाती है।

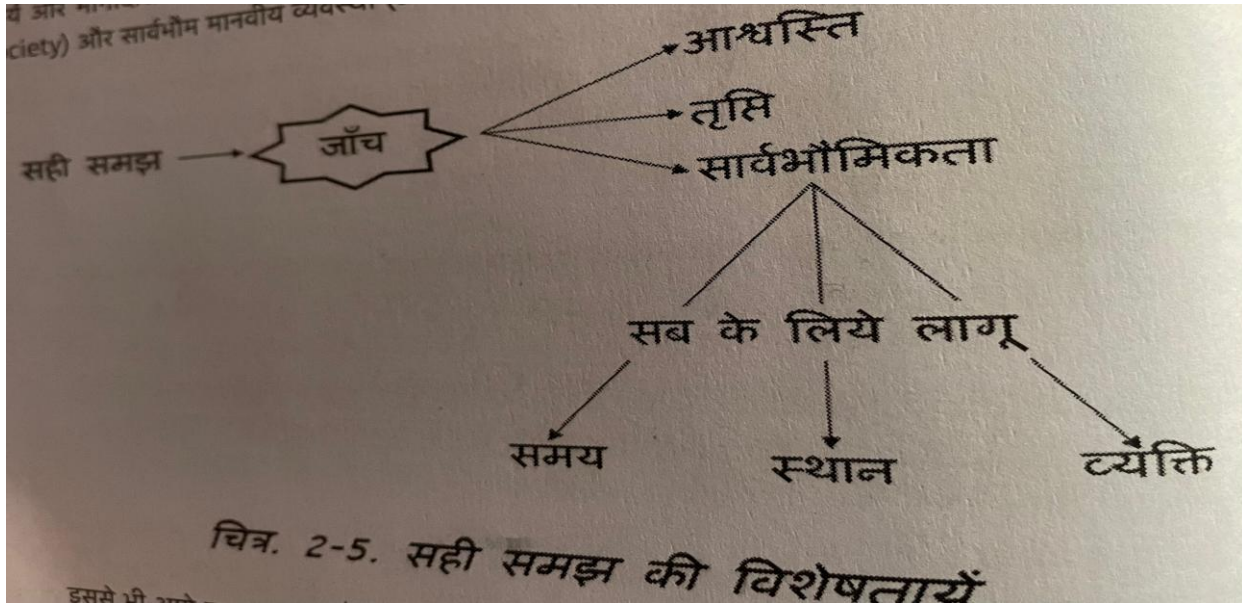
इसमें क्रिटिकल थिंकिंग (critical thinking), मूल्यांकन (evaluation) और अनुभव से सीखने पर बल है।

यह 'आनंद सभा' पाठ्यक्रम की मूल आत्मा है – हर छात्र खुद से प्रश्न करे, स्वयं जाँचे और जीवन में उतारे।

Universal Human Values के दृष्टिकोण से:

सुख और समृद्धि को जीवन का लक्ष्य मानते हुए यह प्रक्रिया बताती है कि सही समझ मानव के साथ व्यवहार में सुख और प्रकृति के साथ कार्य में समृद्धि दिलाती है।

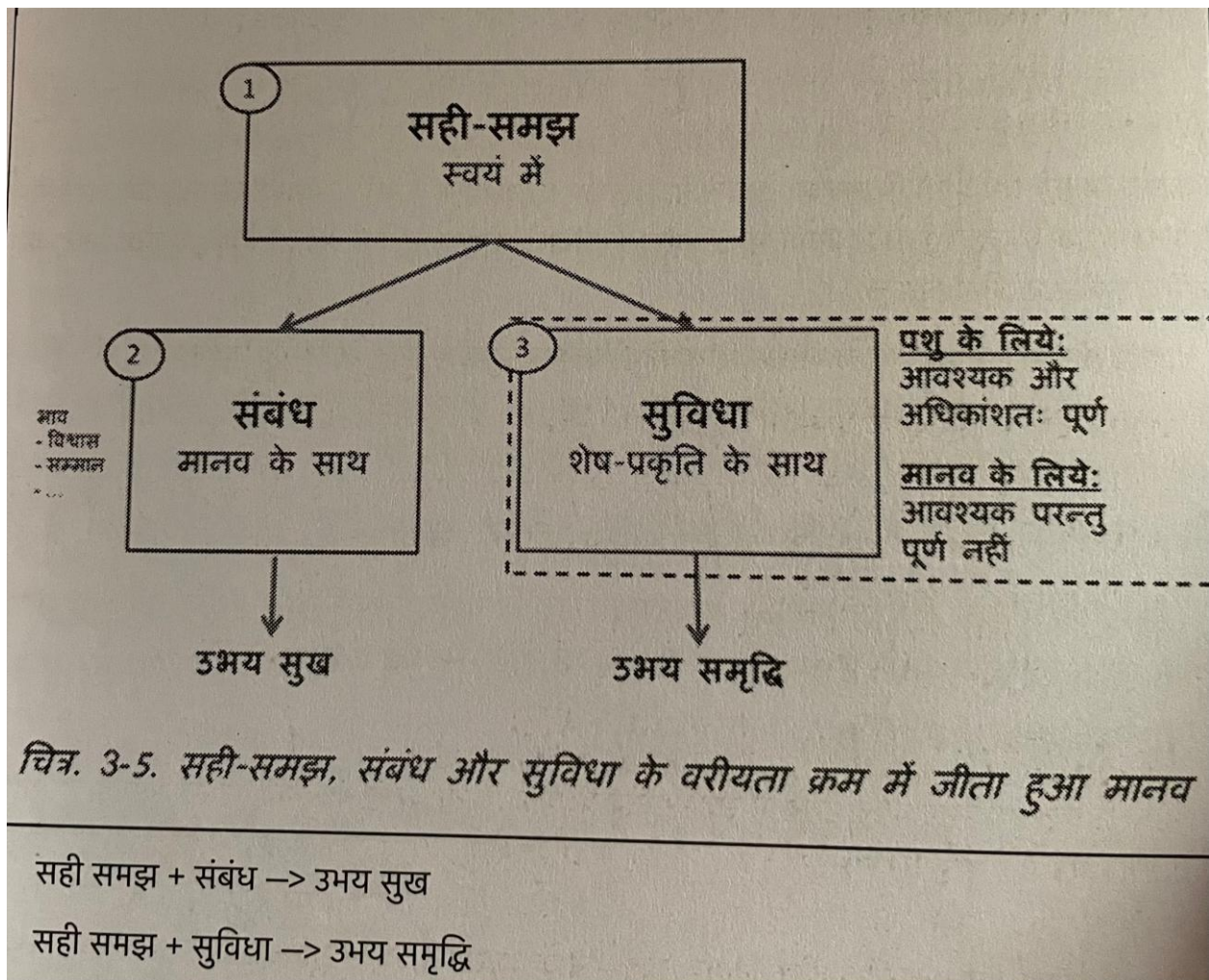
यह मूल्य-आधारित शिक्षा की प्रक्रिया को वैज्ञानिक और व्यक्तिगत दोनों दृष्टिकोण से सशक्त बनाती है। यह चित्र दिखाता है कि ज्ञान थोपने की वस्तु नहीं है, बल्कि स्वतंत्र खोज और परीक्षण का विषय है।



इस अध्याय अनुसार छात्रों को हर प्रस्ताव को स्वयं जांचने, परखने और समझने का अवसर दिया जाना चाहिए, जिससे उसकी उपरोक्तानुसार सही समझ विकसित हो सके तथा वे स्थायी सुख और समृद्धि की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

सीख- सही समझ के निर्णय एक पीढ़ीसे दूसरी पीढ़ी में पहुँच कर पीढ़ी दर पीढ़ी निरन्तर आगे बढ़ती रहे तथा इसके द्वारा प्रत्येक मानव के लिए निरन्तर सुख और समृद्धि पूर्वक जीने की मानवीय परंपरा का उद्भव हो।

अध्याय 3: मानव की मूल चाहना और उसकी पूर्ति :- मूल चाहना से तृप्ति पूर्वक जीने की और अग्रसर होते हैं



यह चित्र 3-5 “सही-समझ, संबंध और सुविधा के दरियता क्रम में जीता हुआ मानव” नामक अवधारणा को स्पष्ट करता है। यह Universal Human Values (UHV) और आनंद सभा पाठ्यक्रम में एक अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु है, जो यह बताता है कि एक समग्र मानव जीवन के लिए किन प्राथमिकताओं का क्रम होना चाहिए।

(1) सही-समझ: यह स्वयं में होती है – यानी मनुष्य के भीतर।

सही समझ जीवन, अस्तित्व, उद्देश्य, रिश्तों और प्रकृति के प्रति स्पष्टता लाती है।

यह आधार है जिससे आगे के सभी निर्णय, संबंध और कार्य प्रेरित होते हैं।

(2) संबंध: यह सही समझ से उत्पन्न होता है।

संबंध में विश्वास, सम्मान, स्नेह, ममता, आदि शामिल हैं।

सही समझ के साथ यदि मानव के साथ संबंध बनते हैं तो “उभय सुख” (mutual happiness) होता है।

(3) सुविधा: – शेष प्रकृति के साथ संबंध:

इसमें भोजन, वस्त्र, आवास, उपकरण आदि भौतिक आवश्यकताएं आती हैं।

यदि सही समझ के साथ भौतिक संसाधनों का उपयोग किया जाए, तो इससे “उभय समृद्धि” प्राप्त होती है – यानी मानव और प्रकृति दोनों का कल्याण होता है।

तुलनात्मक विवेचना:

मुख्य विचार: सुख और समृद्धि की मूल आवश्यकता, उनकी निरंतरता।

मूल्य: संतोष, न्याय, स्थायित्व।

विश्लेषण: यह अध्याय बताता है कि मनुष्य की वास्तविक चाहें क्षणिक भौतिक सुख नहीं, बल्कि निरंतर सुख और समृद्धि होती हैं।

तत्व	मानव के लिए	पशु के लिए
संबंध	आवश्यक	नहीं
सुविधा	आवश्यक, लेकिन पूर्ण नहीं	आवश्यक और लगभग पूर्ण
सही समझ	मूलभूत, सर्वोच्च	नहीं

इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य के लिए केवल सुविधा पर्याप्त नहीं है। उसे संबंध और सही समझ भी चाहिए।

सही क्रम (Priority Order):

सही समझ →

संबंध (मानव से) →

सुविधा (प्रकृति से)

यही क्रम “जीता हुआ मानव” (fulfilled human being) का है।

यह अध्याय यह सिखाता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सुविधा जुटाना नहीं, बल्कि सही समझ और संबंधों की स्थापना है। विद्यार्थी जब इस क्रम को समझते हैं, तो वे संतुलित जीवन की ओर अग्रसर होते हैं। यह चित्र हमें बताता है कि यदि किसी मानव के पास केवल सुविधा है, पर सही समझ और संबंध नहीं हैं, तो वह पूर्ण सुखी और समृद्ध नहीं हो सकता।

केवल “सही समझ + सुविधा” से समृद्धि संभव है,

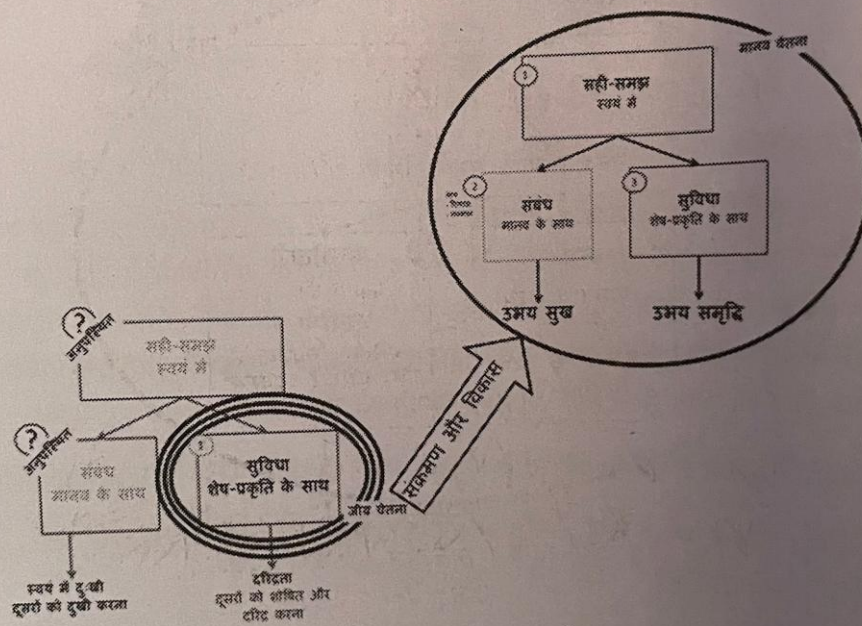
और केवल “सही समझ + संबंध” से सुख संभव है।

लेकिन तीनों होने पर ही पूर्णता (fulfilment) आती है।

शिक्षा-संस्कार की भूमिका (Role of Education-Sanskar)

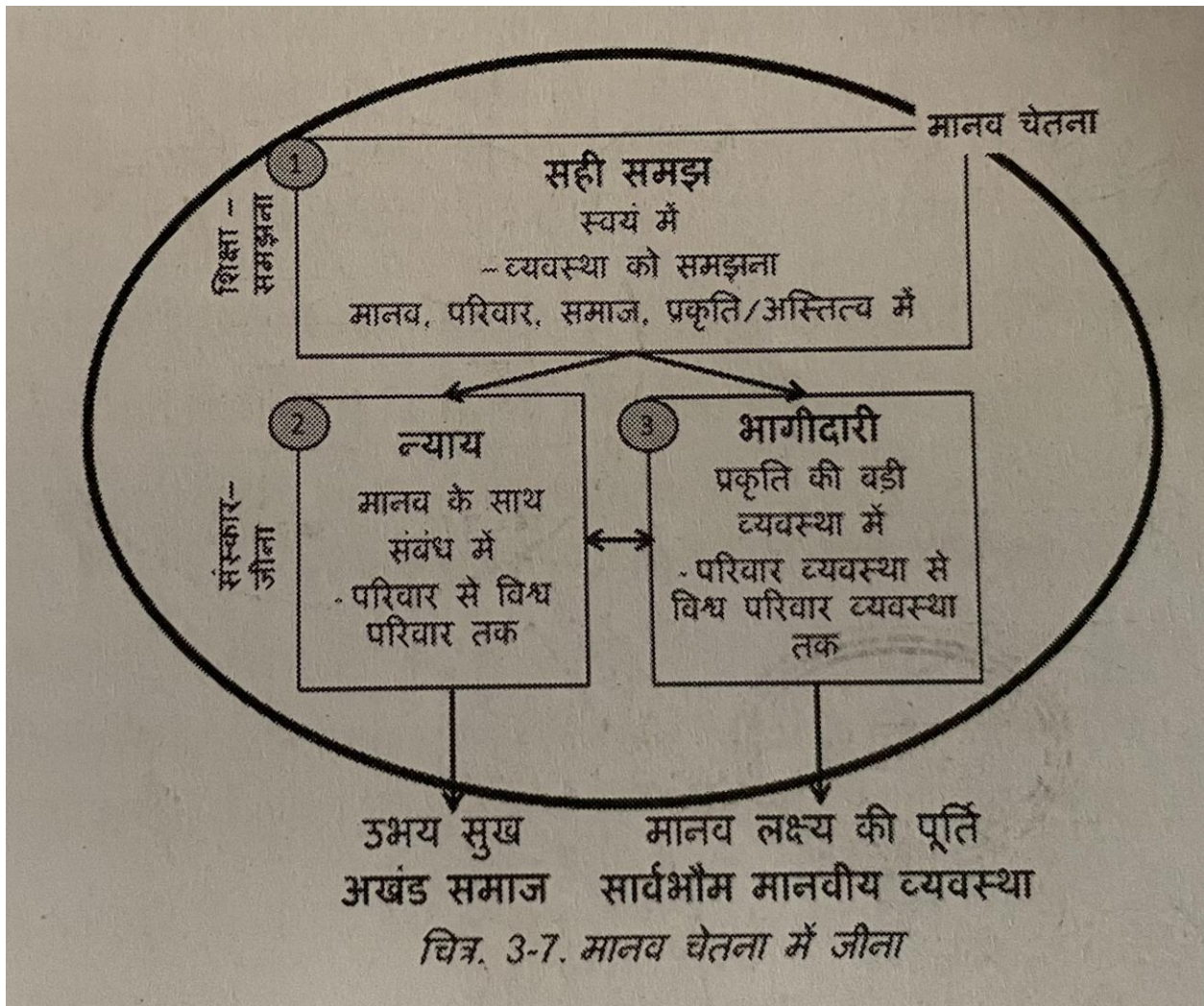
शिक्षा की भूमिका, निश्चित मानवीय आचरण से जीने की योग्यता का विकास अर्थात् मानव-चेतना का विकास करना है। इसके लिये, शिक्षा-संस्कार से निम्न को सुनिश्चित करना होगा:

1. प्रत्येक बच्चे में सही-समझ



चित्र. 3-6. संक्रमण, विकास-क्रम, विकास

2. दूसरे मानव के साथ संबंध पूर्वक जीने की योग्यता तथा
3. भौतिक सुविधाओं की आवश्यकता की पहचान करने की योग्यता, जितनी आवश्यकता है उससे अधिक उत्पादन करने के लिये आवर्तन शील विधि का अभ्यास एवं कौशल, जिससे समृद्धि का भाव सुनिश्चित हो सके।



चित्र 3-6: शिक्षा की भूमिका

शिक्षा को यह सुनिश्चित करना चाहिए:

-हर बच्चे में सही समझ।

-दूसरे मनुष्यों के साथ सद्भाव से रहने की क्षमता।

- वास्तविक भौतिक ज़रूरतों को पहचानने और बिना किसी अतिशयता के उसके अनुसार उत्पादन करने की क्षमता।

-आरेख दर्शाता है कि:

सही समझ के साथ, व्यक्ति को मिलता है:

-उभरती हुई खुशी (संबंधों से)

- उभरती हुई समृद्धि (प्रकृति से)

शिक्षा को समग्र विकास को बढ़ावा देना चाहिए, न कि केवल कैरियर प्रशिक्षण - जिसका उद्देश्य मानव चेतना का विकास करना है।

चित्र 3-7: मानव चेतना के साथ जीना

एक जागरूक मानव समाज का विकास

मॉडल में शामिल हैं:

1. सही समझ: सिस्टम (स्वयं, परिवार, समाज, प्रकृति) को समझना
2. न्याय: न्याय पर आधारित संबंध स्थापित करना (परिवार से दुनिया तक)
3. भागीदारी: प्रकृति और समाज की बड़ी प्रणालियों में भागीदारी से

उभरती हुई खुशी और मानवीय लक्ष्यों की पूर्ति

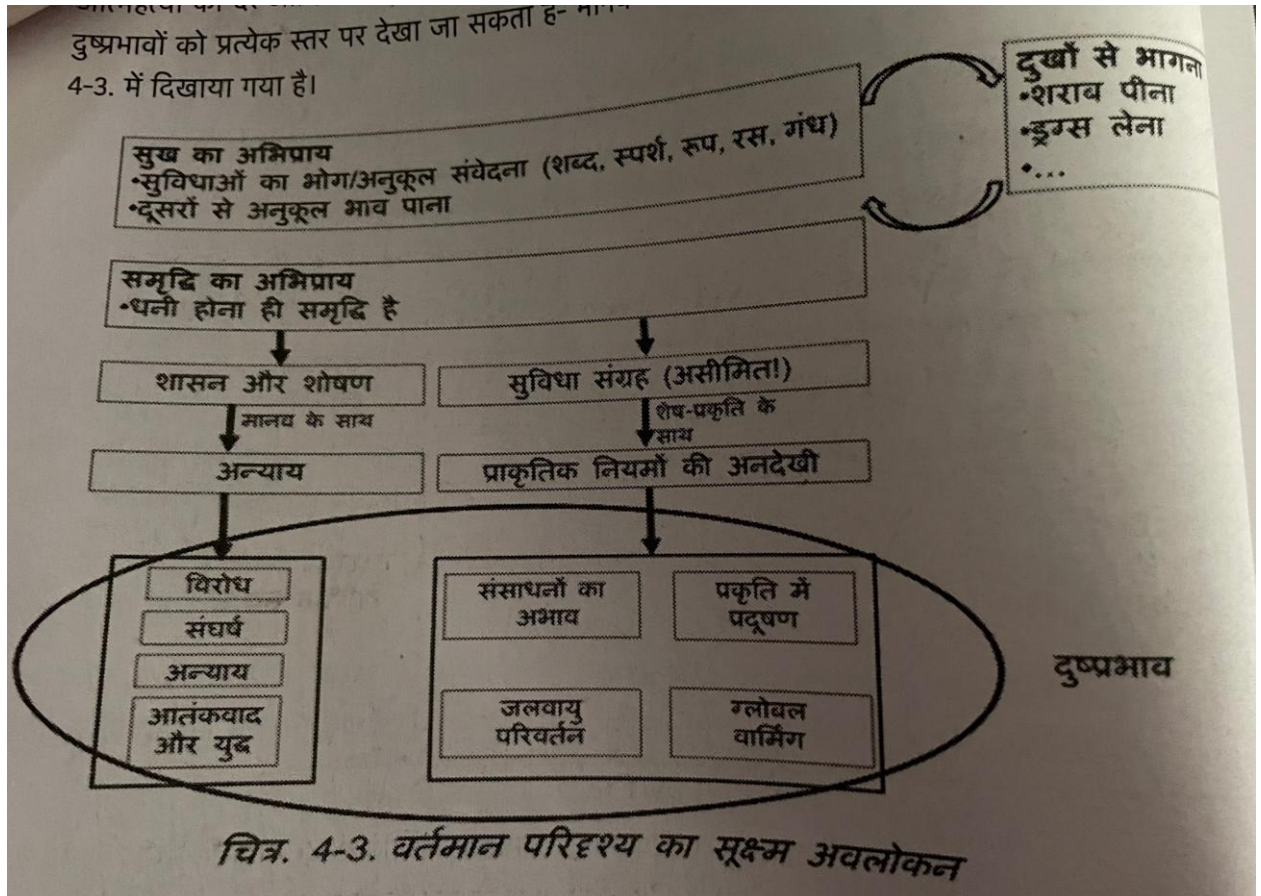
सार्वभौमिक मानव व्यवस्था की स्थापना : मानव चेतना में जीने के लिए सिस्टम को समझना, संबंधों में न्याय और समाज और प्रकृति में जिम्मेदार भागीदारी की आवश्यकता होती है।

ये आरेख मिलकर समग्र शिक्षा का मूल्य-आधारित मॉडल बनाते हैं, जहाँ:

- आंतरिक स्पष्टता (सही समझ) आधार है।
- रिश्तों और सुविधाओं को समझा जाता है और तदनुसार प्रबंधित किया जाता है।
- शिक्षा और संस्कृति का उद्देश्य मानवीय चेतना, न्याय और सद्भाव का पोषण करना है।
- इससे केवल भौतिक समृद्धि ही नहीं, बल्कि सच्चा मानव विकास होता है।

इस अध्याय के माध्यम से विद्यार्थियों में सही समझ सम्बंध और सुविधा की सही समझ विकसित किए जाने के प्रस्ताव दिए गए हैं ।

अध्याय 4: सुख और समृद्धि को समझना-इनकी निरंतरता एवं पूर्ति के लिए कार्यक्रम
मुख्य विचार: सुख की व्याख्या, भ्रम और वास्तविकता का अंतर, समृद्धि के आयाम।
मूल्य: संतुलन, विवेक, आत्म-नियंत्रण।



चित्र 4-3: वर्तमान परिप्रेक्ष्य का सूक्ष्म अवलोकन

यह चित्र वर्तमान समाज में व्याप्त गलत धारणाओं, असंतुलन, और दुष्परिणामों को एक श्रृंखला के रूप में दर्शाता है।

1. सुख का अभिप्राय: यह एक संवेदनात्मक और बाह्य परिभाषा है, जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर नहीं बनाती बल्कि दूसरों और भोग पर निर्भर करती है।

2. समृद्धि का अभिप्राय: यह धारणा असीमित संग्रह और अविवेकपूर्ण उपभोग को जन्म देती है, जो प्राकृतिक असंतुलन का कारण बनता है।

इन गलत धारणाओं के दुष्परिणाम (Consequenses)

मानव के साथ

शासन और शोषण → दूसरों पर वर्चस्व और दबाव।

1. अन्याय → असमानता और सामाजिक तनाव।

2. विरोध, संघर्ष, आतंकवाद, युद्ध → हिंसा और असुरक्षा का माहौल।

प्रकृति के साथ: सुविधा संग्रह (असीमित) → संसाधनों का अत्यधिक दोहन।

प्राकृतिक नियमों की अनदेखी → पारिस्थितिकीय असंतुलन।

परिणाम: संसाधनों की कमी

प्रकृति में प्रदूषण

जलवायु परिवर्तन

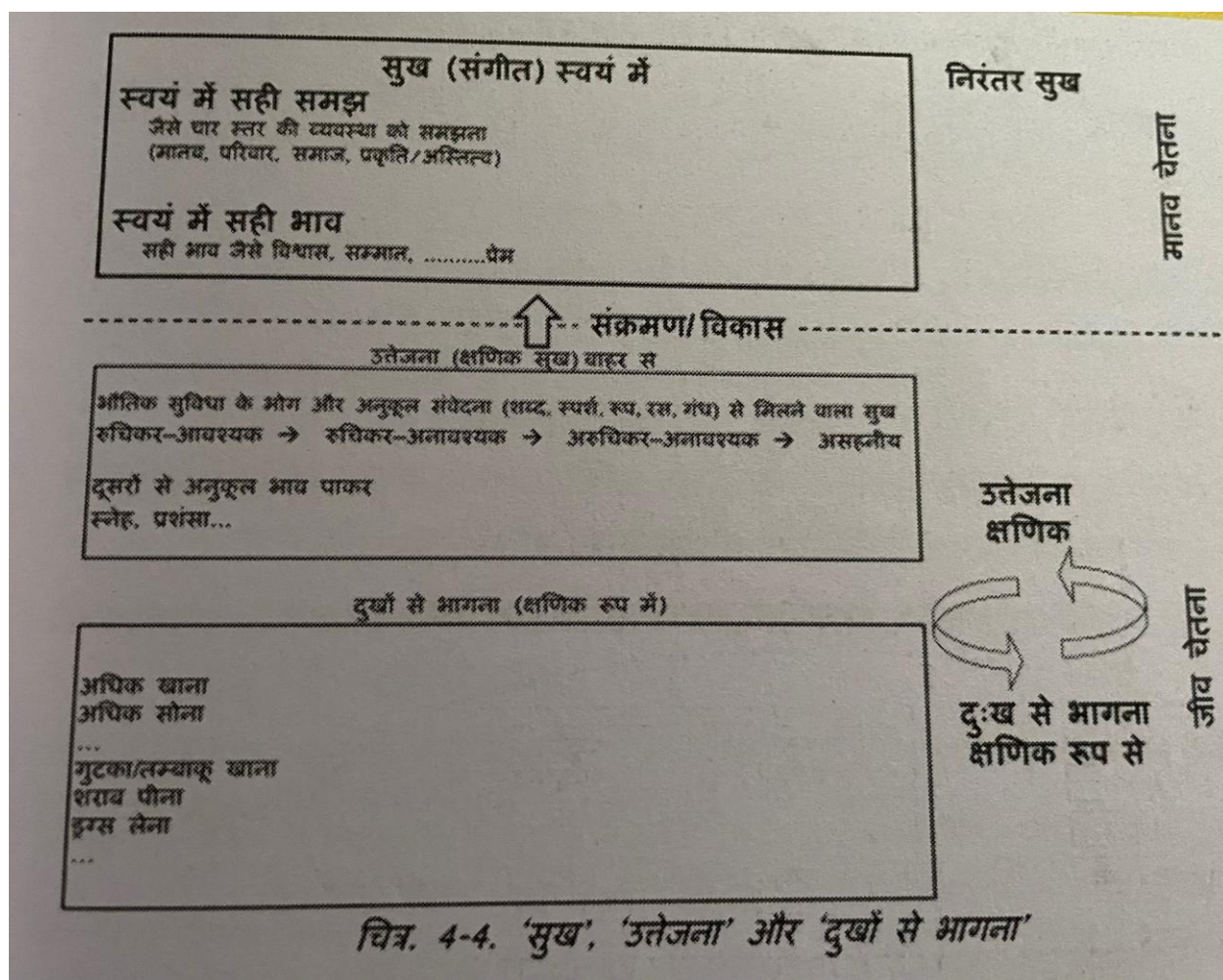
ग्लोबल वॉर्मिंग

दुःख से भागना:

यह चित्र बताता है कि कैसे मानव की गलत समझ, विशेषकर सुख और समृद्धि की भ्रामक परिभाषाएँ, समाज और प्रकृति – दोनों में गंभीर संकट उत्पन्न करती हैं।

इन समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक है: सही समझ (Right Understanding) का विकास। संतुलित जीवन, जहाँ सुख का स्रोत: संबंधों और आत्मसंतोष में हो।

समृद्धि का अर्थ: आवश्यक संसाधनों की पर्याप्तता और विवेकपूर्ण उपभोग।



चित्र 4-4: 'सुख', 'उत्तेजना' और 'दुखों से भागना' –

यह चित्र तीन प्रमुख अवस्थाओं के माध्यम से मानव चेतना की स्थिति को समझाने का प्रयास करता है:

1. 'सुख' की सही समझ (संगीत स्वरूप), सुख (निरंतर सुख) का आधार:

प्रमुख तत्व: स्वयं में सही समझ:

जीवन की व्यवस्था (मानव, परिवार, समाज, प्रकृति/अस्तित्व) को समझना।

स्वयं में सही भाव: जैसे विश्वास, सम्मान, प्रेम, सौहार्द, करुणा आदि।

यह स्थिति व्यक्ति को निरंतर सुख की ओर ले जाती है – जो स्थायी, आंतरिक, और शांति पूर्ण होता है।

2. उत्तेजना (क्षणिक सुख)

उत्तेजना का स्रोत:

चक्रवृद्धि प्रवृत्ति:

सुविधाओं का अधिक भोग → आवश्यकता का भ्रम → लालसा → असंतोष।

दूसरों से अनुमोदन (प्रशंसा, मान्यता) की इच्छा → पराश्रयता।

1. यह एक अस्थायी और क्षणिक स्थिति है, जो उत्तेजना और फिर थकावट की स्थिति में ले जाती है।

3. दुखों से भागना

जब उत्तेजना टिकाऊ न रहे तो क्या होता है?

व्यवहार: अधिक खाना/सोना व्यसन: नशा, शराब, ड्रग्स

इंटरनेट/टीवी/मीडिया का अत्यधिक उपयोग

→ यह स्थिति व्यक्ति को अस्थायी राहत देती है परंतु दीर्घकाल में और अधिक दुख व निर्भरता उत्पन्न करती है।

अवस्था	विशेषता	प्रभाव
सुख (संगीत रूप में)	आंतरिक संतुलन, सही समझ व भाव	स्थायी और निरंतर सुख
उत्तेजना	बाहरी वस्तुओं पर आधारित	क्षणिक सुख, असंतोष
दुख से भागना	उत्तेजना के बाद का भ्रम और पलायन	और अधिक दुख, व्यसन, अशांति

इस चित्र से स्पष्ट होता है कि शिक्षा-संस्कार का मूल उद्देश्य यह होना चाहिए कि व्यक्ति में:

सही समझ (ज्ञानात्मक स्तर पर)

सही भाव (भावनात्मक स्तर पर) का विकास हो, जिससे वह निरंतर सुख की अवस्था में जी सके।

विश्लेषण: यह अध्याय समाज में प्रचलित सुख की धारणाओं को चुनौती देता है और संतुलित, मूल्य आधारित जीवन की ओर निर्देशित करता है। अध्याय में इच्छा सम्बन्धी स्व अन्वेषण अभ्यास दिए गए जिससे छात्र स्व मूल्यांकन कर पाएगा।

अध्याय 5: मानव को स्वयं और शरीर के सह-अस्तित्व के रूप में समझना:-मुख्य विचार: शरीर और 'स्व' का अंतर, चेतना और जड़ के संबंध।

मानव की मूल चाहना
निरंतर सुख और समृद्धि
व्यवस्था में होना सुख है

मूल चाहना की पूर्ति का कार्यक्रम
सभी स्तर पर व्यवस्था को समझना और व्यवस्था में जीना

मानव में व्यवस्था	अध्याय 5-7
परिवार में व्यवस्था	अध्याय 8
समाज में व्यवस्था	अध्याय 9
प्रकृति/अस्तित्व में व्यवस्था	अध्याय 10-11

समझने की प्रक्रिया

स्वात्वेषण
जो भी कहा जा रहा है, यह एक प्रस्ताव है (इसे सही या गलत नहीं मानें)
जैसे, स्वयं के अधिकार पर

में कौन हूँ?

1.

चित्र विश्लेषण - “मानव की मूल चाहना और समझने की प्रक्रिया”

1. मानव की मूल चाहना:

सुख का अर्थ:

आत्मिक संतोष और आंतरिक शांति।

समृद्धि का अर्थ: आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता – परिवार और समाज में संतुलनपूर्वक जीने के लिए।

2. व्यवस्था में होना ही सुख है:

3. मूल चाहना की पूर्ति का कार्यक्रम: इसमें चार स्तरों की व्यवस्था शामिल है:

स्तर	अध्याय
मानव में व्यवस्था	अध्याय 5-7
परिवार में व्यवस्था	अध्याय 8
समाज में व्यवस्था	अध्याय 9
प्रकृति/अस्तित्व में व्यवस्था	अध्याय 10-11

यह क्रमशः स्वयं से लेकर अस्तित्व तक के संबंधों की समझ को स्पष्ट करता है।

4. समझने की प्रक्रिया: 'स्वात्वबोध और स्वविवेक' द्वारा स्वात्वबो: कोई प्रस्ताव (जैसे "मानव स्वभावतः विवेकशील है") आता है।

हम उसे अपने जीवन में जांचते हैं:

क्या यह बात मेरे अनुभव में सही लगती है?

क्या यह बात सार्वभौमिक है?

क्या यह समय-काल-संस्कृति से परे है?

अगर उत्तर "हाँ" है तो वह बात सही समझ बनती है।

5. मुख्य प्रश्न जो आत्म-अवलोकन को प्रेरित करता है:

इस चित्र में मानव की मूल चाहना से लेकर जीवन के विभिन्न स्तरों पर व्यवस्था की समझ तक का व्यवस्थित खाका प्रस्तुत किया गया है। साथ ही यह बताया गया है कि किसी भी विचार को आंख मूंदकर न मानें, बल्कि स्वानुभव द्वारा जांचें, जिससे सही समझ का विकास हो।

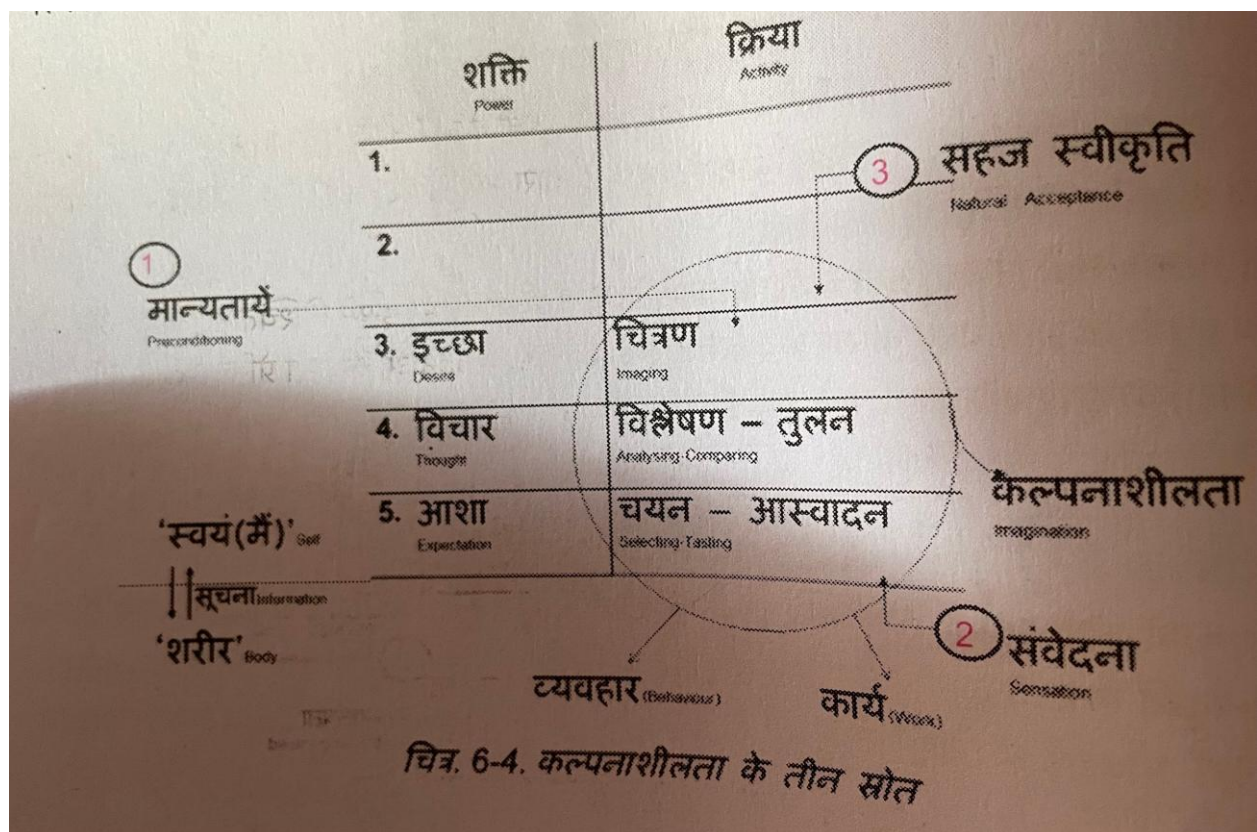
मूल्य: आत्मबोध, सम्मान, समझ।

विश्लेषण: यह अध्याय मानवीय अस्तित्व के द्वैध रूप - 'स्व' और 'शरीर' की स्पष्टता लाता है और उनके सामंजस्य की आवश्यकता पर बल देता है।

अध्याय 6: स्वयं में व्यवस्था - 'स्व' (मैं) को समझना

(Harmony in the Self- Understanding Myself)

मुख्य विचार: कल्पनाशीलता, प्रेरणा-स्रोत, स्वतंत्रता बनाम परतंत्रता।



चित्र 6.4 - कल्पनाशीलता के तीन स्रोत:

यह चित्र मानव की कल्पनाशीलता (Imagination) के तीन प्रमुख स्रोतों को दर्शाता है। यह "स्वयं (मैं)" और "शरीर" के बीच की अंतःक्रिया को स्पष्ट करता है, तथा यह दिखाता है कि हमारे विचार, इच्छाएँ, आशाएँ आदि कैसे उत्पन्न होती हैं और उनका आधार क्या होता है।

1. मान्यताएँ (Presconditioning)

यह पहला स्रोत है जो हमारी इच्छाओं, विचारों और आशाओं को प्रभावित करता है।

ये मान्यताएँ हमें समाज, परिवार, परंपरा, शिक्षा, मीडिया आदि से प्राप्त होती हैं।

कई बार हम बिना जांचे-परखे इन्हें सच मान लेते हैं और उसी आधार पर निर्णय लेते हैं।

~ मान्यताएँ → इच्छा → विचार → आशा → व्यवहार/कार्य

2. संवेदना (Sensation)

यह हमारे शरीर के माध्यम से आने वाले अनुभव हैं, जैसे – स्वाद, गंध, स्पर्श, दृश्य और ध्वनि। ये अनुभव हमें क्षणिक सुख देते हैं और बाह्य सुख की खोज को बढ़ाते हैं। यह भी एक प्रमुख स्रोत है जो हमारी इच्छाओं को जन्म देता है और हमें उत्तेजनात्मक जीवन शैली की ओर ले जाता है।

~संवेदना → इच्छा → विकल्प → चयन → कार्य

3. सहज स्वीकृति (Natural Acceptance)

यह मैं (स्वयं) का गुण है – एक स्वाभाविक बोध कि क्या सही है और क्या गलत। यह पूर्वाग्रहों से मुक्त होती है और समय, स्थान, परिस्थिति से परे होती है।

जब हम इस आधार पर कार्य करते हैं, तो वह स्थायी सुख और संतुलन की ओर ले जाता है।

~सहज स्वीकृति → सही विचार → सही आशा → सही व्यवहार

तत्व

अर्थ

स्वयं (मैं)

चेतन इकाई जो जानने, समझने, अनुभव करने की क्षमता रखती है।

शरीर

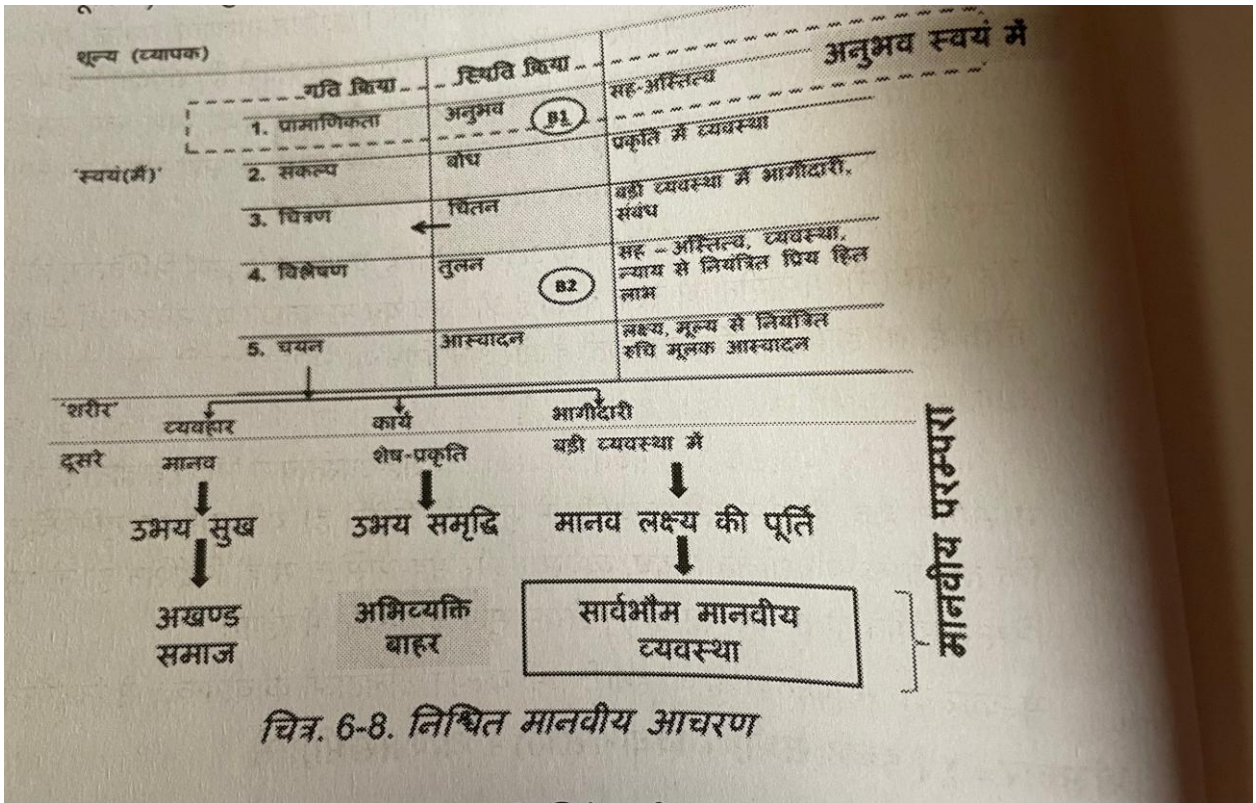
भौतिक इकाई, जो क्रियाएं करता है और संवेदनाओं को ग्रहण करता है।

शक्ति और क्रिया

शक्ति (Power) वह क्षमता है जो किसी क्रिया को संभव बनाती है; क्रिया (Activity) वह प्रक्रिया है जो परिणाम देती

है।

कल्पनाशीलता का कार्य: कल्पनाशीलता के माध्यम से हम -चिन्तन (सोचते हैं), विश्लेषण और तुलना (तर्क करते हैं), चयन और आस्वादन (फैसला लेते हैं) करते हैं। यह सारी प्रक्रिया 'स्वयं' में होती है, और इसका प्रभाव हमारे व्यवहार और कार्य पर पड़ता है।



चित्र 6.8: निश्चित मानवीय आचरण -

यह चित्र मानव के आंतरिक क्रियाकलापों और बाहरी व्यवहार के बीच के संबंध को दर्शाता है। इसका उद्देश्य यह बताना है कि हम कैसे अपने स्वयं (मैं) के भीतर के अनुभव के आधार पर मानवीय उद्देश्य (उद्देश्यपूर्ण सुख और समृद्धि) की प्राप्ति कर सकते हैं, जिससे एक सार्वभौमिक मानवीय व्यवस्था की स्थापना होती है।

1. 'स्वयं' (मैं) में क्रियाएँ:

यह वह चेतन इकाई है जो अनुभव करती है, सोचती है और निर्णय लेती है।

अनुक्रम

क्रिया

व्याख्या

1. प्रज्ञात्मकता	अनुभव (B1)	सही-असली अनुभव, जो समग्र दृष्टि से आता है।
2. संकल्प	बोध	सही व्यवस्था का बोध, मूल्य की पहचान
3. चिन्तन	चिन्तन	व्यवस्था और व्यवहार में स्थिरता, एकरूपता
4. विश्लेषण	तुलना (B2)	मूल्य आधारित विवेचन, सही-गलत का निर्णय
5. चयन	आस्वादन	सही विकल्प का चुनाव और उसका आस्वादन

2. 'शरीर' से जुड़ा व्यवहार:

शरीर उपकरण की तरह काम करता है, यह “स्वयं” द्वारा निर्देशित होता है। जब “स्वयं” में सही अनुभव और सही सोच होती है, तब शरीर से सही कार्य होते हैं।

व्यवहार और उसके परिणाम:

क्षेत्र	उद्देश्य	अंतिम लक्ष्य
दूसरे मानव से	उचित सुख	अखण्ड समाज
शेष प्रकृति से	उचित समृद्धि	अभिव्यक्ति बाहर में संतुलन
समग्र व्यवस्था में	मानवीय लक्ष्य की पूर्ति	सार्वभौमिक मानवीय व्यवस्था

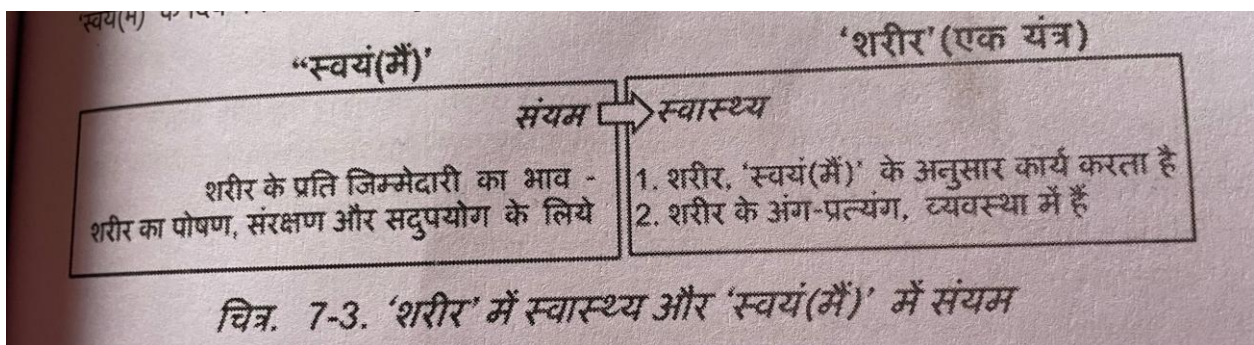
अनुभव 'स्वयं' में: चित्र में दर्शाया गया है कि सही अनुभव का केंद्र “स्वयं” होता है। जब हम स्वयं में अनुभव करते हैं (B1), तब हम सही मूल्य को पहचानते हैं। जब हम तुलना करते हैं (B2), तो सही-मूल्य आधारित चुनाव करते हैं।

जब व्यक्ति अपने भीतर (स्वयं) में मूल्य की सही समझ और अनुभव विकसित करता है, तो उसका व्यवहार – मानव के प्रति सुखद होता है, प्रकृति के प्रति समृद्धिपूर्ण होता है, और यह मिलकर एक सार्वभौमिक मानवीय व्यवस्था की ओर ले जाते हैं। इस चित्र से यह स्पष्ट होता

है कि मानव की सोच और कार्य केवल बाहरी प्रभाव (संवेदना) या परंपरागत मान्यताओं पर आधारित नहीं होनी चाहिए। यदि हम सहज स्वीकृति को आधार बनाएँ, तो हमारी कल्पनाशीलता सही दिशा में उपयोग होती है, और हम संतुलित व मूल्य आधारित जीवन जी सकते हैं। यह अध्याय मान्यताओं, संवेदनाओं और स्वीकृति के माध्यम से हमारी कल्पनाओं को दिशा देने की बात करता है। यह स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को मूल्यों से जोड़ता है।

अध्याय 7: 'शरीर' के साथ 'स्वयं(मैं)'की व्यवस्था - संयम और स्वास्थ्य को समझना

मुख्य विचार: शरीर और 'स्व' की परस्पर व्यवस्था, स्वास्थ्य की परिभाषा।



यह चित्र 'शरीर' और 'स्वयं' के बीच संबंध को दर्शाता है. यह बताता है कि कैसे 'संयम' के माध्यम से 'स्वास्थ्य' को बनाए रखा जा सकता है.

चित्र में दो मुख्य भाग हैं:

'स्वयं': यह भाग शरीर के प्रति जिम्मेदारी की भावना को दर्शाता है. यह शरीर के पोषण, संरक्षण और सदुपयोग के महत्व पर प्रकाश डालता है. 'शरीर' (एक यंत्र): यह भाग बताता है कि शरीर 'स्वयं' के अनुसार कार्य करता है. इसमें शरीर के अंग-प्रत्यंग व्यवस्था में हैं. चित्र यह भी दर्शाता है कि 'संयम' इन दोनों भागों को जोड़ता है. संयम का पालन करके, विद्यार्थी अपने शरीर और स्वास्थ्य दोनों को बेहतर बनाए रख सकता है. इस चित्र में दी गई जानकारी का उपयोग करके, व्यक्ति अपने जीवन में संयम का महत्व समझ सकता है और एक स्वस्थ जीवन शैली अपना सकता है ।

मूल्य: संयम, उत्तरदायित्व, अनुशासन।

विश्लेषण: यह अध्याय दर्शाता है कि जब व्यक्ति 'स्व' के दृष्टा, कर्ता और भोक्ता रूप को पहचानता है, तभी वह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का संतुलन बना सकता है।

अध्याय 8 (अ): मानव-मानव सम्बन्ध में मूल्य - ममता और वात्सल्य :-मुख्य विचार: ममता, वात्सल्य, आत्मीयता, श्रद्धा, कृतज्ञता।

श्रेष्ठता

व्यवस्था को समझना और
व्यवस्था में जीना

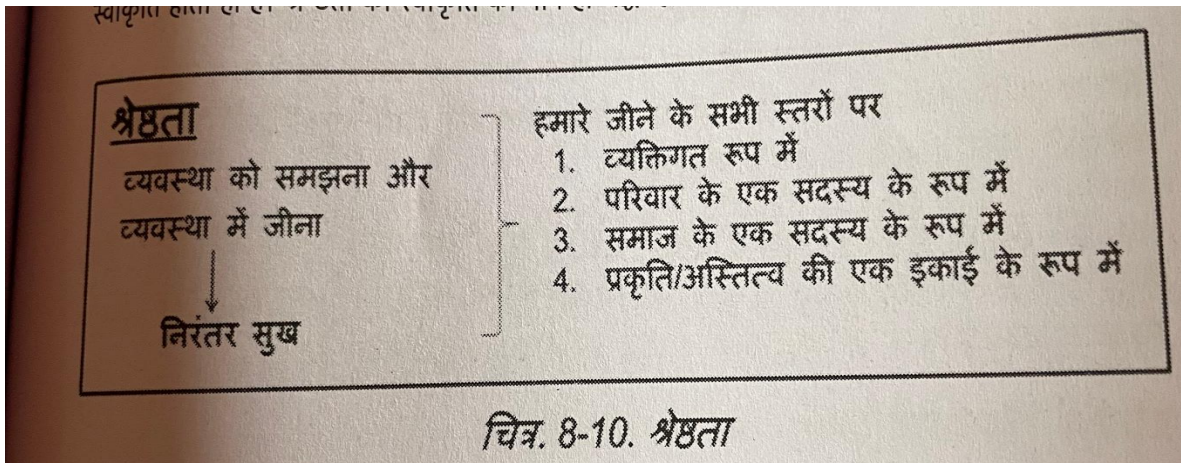


निरंतर सुख

हमारे जीने के सभी स्तरों पर

1. व्यक्तिगत रूप में
2. परिवार के एक सदस्य के रूप में
3. समाज के एक सदस्य के रूप में
4. प्रकृति/अस्तित्व की एक इकाई के रूप में

चित्र. 8-10. श्रेष्ठता



मूल्य: ममता, विश्वास, आदर।

विश्लेषण: संबंधों में जो गुणात्मक तत्व होते हैं जैसे - अपनापन, आदर, गौरव, उनका शिक्षार्थियों में विकास आवश्यक है। यह अध्याय इसी पर केंद्रित है।

अध्याय 8 (ब): मानव-मानव सम्बन्ध में पूर्ण मूल्य - प्रेम

मुख्य विचार: प्रेम की पूर्णता, अपेक्षा रहित संबंध, न्याय।

मूल्य: प्रेम, निष्कपटता, करुणा।

विश्लेषण: प्रेम को सर्वश्रेष्ठ मानवीय मूल्य के रूप में प्रस्तुत करते हुए यह अध्याय बताता है कि प्रेम केवल भावना नहीं बल्कि कर्तव्य और न्याय का संतुलन भी है। अध्याय में सम्बन्धी के

प्रति प्रेम और विश्वास के भाव को सही समझ और जिम्मेदारी के साथ पूर्ण करने की सीख दी गई है। उदाहरण के माध्यम से पति-पत्नी के टूटते रिश्ते को संभालने के वृत्तांत है जिससे मानवीय सम्बन्ध की पूर्ति और समझ विकसित होती है

अध्याय 9: समाज में व्यवस्था - सार्वभौमिक मानवीय व्यवस्था

मुख्य विचार: यह अध्याय इस बात पर केन्द्रित है कि समाज में कैसी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे हर व्यक्ति सुख और समृद्धि के साथ जीवन जी सके। समाज का उद्देश्य केवल व्यक्तियों की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं, बल्कि उनके आत्मिक, नैतिक व संबंधपरक संतुलन को सुनिश्चित करना है। संपूर्ण मानव लक्ष्य: अध्याय में बताया गया है कि मानव का लक्ष्य सुख और समृद्धि है, जो केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामाजिक स्तर पर भी पूर्ण होनी चाहिए। सह-अस्तित्व: एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकता है जहाँ सभी का स्थान और भूमिका सुनिश्चित हो और एक-दूसरे का सम्मान बना रहे – यह न्याय और पारस्परिकता के सार्वभौमिक मूल्यों से जुड़ा है। वर्तमान सामाजिक समस्याएँ: वर्तमान में समाज में असमानता, हिंसा, भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ हैं जिनका समाधान केवल कानून या तकनीक नहीं बल्कि मूल्य-आधारित शिक्षा द्वारा संभव है।

अध्याय 10: प्रकृति में व्यवस्था - पारस्परिकता और नियंत्रण

अंतःसंबंध, स्व-नियंत्रण और पारस्परिक पूरकता को समझना

यह अध्याय प्रकृति की व्यवस्था को समझने के लिए प्रेरित करता है कि प्रकृति में सभी घटक जैसे - पृथ्वी, जल, वायु, वनस्पति - परस्पर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। प्रकृति की पारस्परिक पूरकता: चार श्रेणियाँ - पृथ्वी/जल/वायु (जड़), वनस्पति, पशु, मानव - एक-दूसरे के पूरक हैं। यह सह-अस्तित्व का सिद्धांत है, जो NEP 2020 में भी पर्यावरणीय चेतना से जुड़ा है। स्व-नियंत्रण: प्रकृति अपने भीतर स्व-नियंत्रित है। यह सिखाता है कि मानव को भी अपने व्यवहार को संतुलित और अनुशासित रखना चाहिए – संयम, संतुलन और कर्तव्यबोध जैसे मूल्य इस पर आधारित हैं। मानव का दायित्व: मानव को अन्य इकाइयों के साथ सम्मानजनक संबंध बनाना चाहिए, न कि उनका शोषण। यह विचार प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व (environmental responsibility) को दर्शाता है।

अध्याय 11: अस्तित्व में व्यवस्था - सह-अस्तित्व की संपूर्णता

यह अध्याय अस्तित्व को एक समग्र इकाई के रूप में देखने की प्रेरणा देता है जहाँ सब कुछ परस्पर जुड़ा है।

विभिन्न घटक इकाइयाँ (जड़, वनस्पति, जीव, मानव) सह-अस्तित्व में हैं – यह अखंडता (wholeness) का बोध कराता है। विविधता में एकता: सभी इकाइयाँ विविध होने के बावजूद एक संपूर्ण व्यवस्था का हिस्सा हैं, जो मानव को सर्वांगीण दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती है। संपूर्णता की चेतना: यह अध्याय बताता है कि केवल व्यक्तिगत भला नहीं बल्कि समष्टिगत कल्याण ज़रूरी है – यह सर्वभूत हिताय की भावना को मजबूत करता है। समाधान की दिशा: जब तक मानव अस्तित्व के इस दृष्टिकोण को नहीं समझेगा, तब तक समस्याएँ बनी रहेंगी। बोध, सम्मान, कर्तव्य, और पारस्परिकता जैसे मूल्य इससे विकसित होते हैं। समाज में सहभागिता, न्याय, मानव लक्ष्य।

मूल्य: सामाजिक जिम्मेदारी, सहयोग, समानता।

यह अध्याय व्यक्ति से समाज तक के यात्रा को दर्शाता है जहाँ हर व्यक्ति की सहभागिता एक नैतिक जिम्मेदारी बन जाती है।

आनंद सभा' पाठ्यक्रम का उद्देश्य केवल नैतिकता सिखाना नहीं, बल्कि जीवन को समग्रता में समझकर जीना सिखाना है। यह प्रत्येक अध्याय के माध्यम से विद्यार्थियों में नीचे दिए गए Universal Values का निर्माण करता है:

दृश्य गतिविधियों और एक कहानी का प्रतिनिधित्व: चित्रण (Visuals / Representations) स्वयं और शरीर के बीच के संबंध को दर्शाने वाले चित्र: “स्वयं (चेतन इकाई)” और “शरीर (जड़ इकाई)” को अलग-अलग परिभाषित करने वाले चित्रों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि मानव सिर्फ शरीर नहीं है, बल्कि चेतना भी है।

प्रकृति और अस्तित्व के सह-अस्तित्व को दर्शाने वाले चार स्तरों (Order) के चित्र:

Material Order (पदार्थ), Plant/Bio Order (वनस्पति), Animal Order (प्राणि), और Human Order (मानव) के बीच परस्पर पूरकता। मानवीय मूल चाहतें जैसे सुख और समृद्धि को ग्राफ़ और डायग्राम से समझाया गया है, जो अस्थायी भौतिक संसाधनों और आत्मिक स्थायित्व में भेद करते हैं।

गतिविधियाँ (Activities)

हर अध्याय के अंत में “स्व-मूल्यांकन”, “स्व-अन्वेषण” और “प्रोजेक्ट तथा मॉडलिंग अभ्यास” शामिल हैं, जैसे:

स्व-अन्वेषण की गतिविधियाँ:

“स्वयं को देखने” का अभ्यास: दर्पण के सामने बैठकर स्वयं के स्वरूप को पहचानना।

“हर क्षण में स्वयं को देखना”: अपनी भावनाओं, विचारों और प्रतिक्रियाओं को नोट करना।

सह-अस्तित्व आधारित प्रोजेक्ट्स: प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग - अपने समुदाय में जल, ऊर्जा आदि के उपयोग पर रिपोर्ट बनाना। सम्मान और संवेदनशीलता का अभ्यास - अपने घर और विद्यालय में व्यवहार के विश्लेषण पर कार्य।
मॉडलिंग अभ्यास: समूह चर्चा के ज़रिए मूल्यों पर आधारित निर्णय लेना।

दैनिक जीवन की घटनाओं को मूल्यों के संदर्भ में जांचना।

कहानियाँ और दृष्टांत: हालाँकि पूरी पाठ्यपुस्तक मुख्यतः अवधारणात्मक और अभ्यास-आधारित है, इसमें लघु दृष्टांत, अनुभव कथन और परिचर्चा-आधारित प्रसंग मौजूद हैं, जैसे: श्रद्धा, ममता, कृतज्ञता, प्रेम आदि पर आधारित जीवन प्रसंग - जिनसे विद्यार्थियों को आत्म-अन्वेषण हेतु प्रेरणा मिलती है। शरीर और स्वयं के द्वंद्व को दर्शाने वाले दृष्टांत - जैसे, लालच और संयम के बीच संघर्ष। मानव और प्रकृति का संबंध दर्शाने वाले प्रसंग - उदाहरणस्वरूप, “पौधों की देखभाल” को व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी से जोड़ना। “आनंद सभा” पाठ्यक्रम में पाठ्य-वस्तु को केवल सैद्धांतिक न रखकर, व्यावहारिक, दृश्यात्मक और अनुभवात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे छात्र न केवल मूल्यों को समझ सकें, बल्कि उन्हें अपने दैनिक जीवन में आत्मसात कर सकें।

स्रोत: [Class Xth Anand Sabha Text Book 2024.pdf]